छिड़काव प्ररोहों के उचित विकास हेतु लाभदायक होता है।

कीट एवं व्याधियों का प्रबन्धन

बाग की सामयिक निराई–गुड़ाई करते रहना चाहिए। समुचित देख रेख के अभाव में कृन्तित वृक्ष तनाभेदक कीट से ग्रसित हो जाता है। कीट द्वारा बनाए सुराख में लोहे की पतली तीली डालकर कीड़ों को निकाल कर नष्ट कर देते हैं या नुआन कीटनाशी दवा में भीगे रूई के फोहों को छेद में रखकर छेद को गीली मिट्टी से बन्द कर देते हैं। इस प्रकार इस कीट का नियंत्रण किया जा सकता है। नव सृजित कल्लों को पत्ती खाने वाला कीट अधिक क्षति पहुंचा सकता है। कार्बरिल (सेविन) कीटनाशी दवा (3 ग्राम प्रति लीटर पानी) का 10–12 दिन के अन्तराल पर दो छिड़काव करके इस कीट का प्रबन्धन किया जा सकता है। पर्ण धब्बों (एन्थ्रैकनोज रोग) की रोकथाम के लिए कॉपर आक्सीक्लोराइड (3 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव लाभदायक होता है।

पुष्पन एवं फलन

छांटे गये वृक्षों की सघन एवं सामयिक देखभाल करने से कृन्तित शाखाओं पर सृजित कल्ले लगभग दो वर्ष उपरान्त पुष्पन एवं फलन में आने लगते हैं। प्रयोगों के आधार पर यह पाया गया कि कृन्तित वृक्षों से गुणवत्तायुक्त आम की औसतन 64 कि.ग्रा. उपज प्रति वृक्ष प्रतिवर्ष प्राप्त हो जाता है तथा प्रति वर्ष उत्पादन में बढ़ोत्तरी होकर पुराने एवं अनुत्पादक आम के बाग पुनः आर्थिक रूप से लाभदायक सिद्ध होते हैं।

जीर्णोद्धार व्यय

जीर्णोद्धार तकनीक से सम्बन्धित सभी मदों जैसे–श्रम, खाद एवं उर्वरक, सिंचाई, निराई–गुड़ाई, कीट एवं फफूँदी नाशक दवाओं आदि पर किए गये व्यय का आंकलन कर यह पाया गया है कि प्रारम्भिक तीन वर्षों में औसतन रुपये 160/– प्रति वृक्ष खर्च आता है।

विस्तृत जानकारी के लिए कृपया निम्न पते पर सम्पर्क करें

निदेशक, **केन्द्रीय उपोष्ण उद्यान संस्थान**

रहमानखेड़ा, पो० – काकोरी, लखनऊ–227 107

दूरभाष : (0522) 841022, 841024, फैक्स : (0522) 841025

ई–मेल : cish2001in@yahoo.co.in

आवरण पृष्ठ

1	2
3	4

1. आम का घना बाग 2. वृक्षों की कटाई
3. कटे वृक्षों में नए कल्लों का सृजन
4. जीर्णोद्धार उपरांत फलन (बागवान श्री कामिल खां काकोरी)

सौजन्य से : राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड

Army Printing Press, Lucknow. Ph. : 481164

आम के बागों का जीर्णोद्धार

केन्द्रीय उपोष्ण उद्यान संस्थान

रहमानखेड़ा, डाकघर– काकोरी,

लखनऊ– 227 107

आम के बागों का जीर्णोद्धार

आम उत्पादन में भारतवर्ष अग्रणी राष्ट्र है, परन्तु विश्व व्यापार संगठन के दौर में देश व विदेश के बाजारों में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने तथा लाभप्रद व्यवसाय के लिए गुणवत्तायुक्त प्रति इकाई उत्पादन में वृद्धि लाना एक चुनौती है। ऐसे में 30–35 प्रतिशत पुराने एवं अनुत्पादक बागों की बाहुल्यता एक गंभीर चिंता का विषय है।

व्यापक स्तर पर अनुत्पादक पुराने बागों को समूल निकालकर नये बाग स्थापित करना दीर्घकालीन एवं खर्चीला विकल्प होगा। केन्द्रीय उपोष्ण उद्यान संस्थान, लखनऊ के द्वारा विकसित जीर्णोद्धार तकनीक अपनाकर आम के पुराने बागों को पुनर्युवन प्रदान किया जा सकता है तथा उनकी गुणवत्ता युक्त उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है। आर्थिक एवं परिस्थितिकीय दृष्टिकोण से यह तकनीक निःसंदेह बागवानों के लिए प्रभावी एवं लाभकारी साबित होगी।

ऐसा देखा गया है कि 45–50 वर्ष बाद आम के वृक्षों की शाखायें बढ़कर दूसरे वृक्षों को छूने लगती हैं। फलस्वरूप सूर्य का प्रकाश वृक्षों के पर्णीय भागों में पर्याप्त मात्रा में नहीं पहुंच पाता है। जिसके अभाव में प्रकाश–संश्लेषण की क्रिया क्षीण हो जाती है, फलस्वरूप कल्ले पतले और अस्वस्थ हो जाते हैं। यही नहीं ऐसे बागों में कीट एवं व्याधियों का प्रकोप भी अधिक होता है जिनका नियंत्रण कर पाना कठिन हो जाता है और बाग उत्पादन की दृष्टि से अनुपयुक्त हो जाते हैं। ऐसे वृक्षों की सामयिक एवं वांछित कटाई –छँटाई (कृन्तन) करके बागों को पुनः उत्पादक बनाया जा सकता है। आवश्यक कटाई–छँटाई करने से नए कल्लों का सृजन होकर कृन्तित वृक्ष का आकार दो वर्षो में छतरीनुमा बन जाता है जिससे प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया सुदृढ़ हो जाती है तथा पुष्पन व फलन क्षमता बढ़ जाती है।

कटाई–छँटाई विधि

पुराने, घने एवं आर्थिक दृष्टि से अनुपयोगी वृक्षों की सभी अवांछित शाखाओं को पहले चिन्हित कर लेते है। फिर दिसम्बर माह में चिन्हित शाखाओं का भूमि सतह से लगभग 4 से 5 मीटर की ऊँचाई पर आरी से कटाई करते हैं। कटाई के लिए शक्ति चालित आरी अधिक उपयुक्त है। सूखी, रोग ग्रसित एवं पेड़ के बीच की घनी शाखाओं को काटकर निकाल देते हैं। पर्णीय क्षेत्र के विकास के लिये पेड़ पर मात्र 3 से 4 कृन्तित शाखायें ही रखते हैं। कृन्तन करते समय यह सावधानी अवश्य रखनी चाहिए कि शाखायें अनावश्यक रूप से निचले भाग से फट न जायें। अतः पहले आरी से नीचे की तरफ लगभग 15–20 से.मी. कृन्तन कर, फिर टहनी के ऊपरी भाग से कटाई करते हैं। कृन्तन के तुरन्त बाद 1. कि.ग्रा. फफूंदी नाशक दवा (कॉपर आक्सीक्लोराइड), 250 ग्राम अण्डी का तेल एवं उचित मात्रा में पानी मिलाकर तैयार किया गया लेप शाखाओं के कटे हुए भाग पर लगाते हैं ताकि सूक्ष्म जीवाणुओं तथा रोगों का संक्रमण न हो सके। बायोडायनिमक ट्री पेस्ट (40 : 40 : 40 किग्रा. के अनुपात में बाग की मिट्टी, बालू तथा दुधारू गाय के गोबर के साथ 25 ग्रा. बी. डी. 500 (गाय सींघ खाद) का मिश्रण) या गोबर और चिकनी मिट्टी बराबर मात्रा में मिलाकर तैयार किया गया लेप भी प्रभावी होते हैं। इसके बाद फरवरी माह के मध्य में वृक्षों के तनों के पास थाले एवं सिंचाई की नालियां अवश्य बना देनी चाहिए।

जीर्णोद्धार के लिए वृक्षों की कटाई बाग की एकान्तर पंक्तियों में करनी चाहिए जिससे बागवानों पर आर्थिक प्रभाव कम पड़ता है। एकान्तर पंक्तियों में कृन्तन के फलस्वरूप बाग में सूर्य का प्रकाश पर्याप्त रूप से उपलब्ध हो जाता है। जिससे शेष एकान्तर पंक्तियों के वृक्षों में, जिनका कटाई–छँटाई नहीं किया गया है, समुचित प्रकाश मिलने से स्वस्थ कल्ले निकलते हैं और पहले की अपेक्षा उत्पादन में लगभग 3–4 गुना तक वृद्धि हो जाती है।

उपज में वृद्धि तथा कटी लकड़ियों की बिक्री व बाग में अन्तः फसल से अर्जित आमदनी कटाई से हुई क्षति की प्रतिपूर्ति कर देते हैं।

अन्तः फसलें

एकान्तर पंक्ति की कटाई–छँटाई के बाद वृक्ष के दोनों तरफ काफी खुली जगह हो जाती है। जिसमें अन्तः फसलें लेकर अतिरिक्त आमदनी अर्जित की जासकती है। जायद में तरोई, लौकी, खीरा, लोबिया और रवी के मौसम में आलू की फसल लेना लाभदायक है।

पोषण एवं जल प्रबन्धन

कटाई के बाद वृक्षों में, 2.5 कि.ग्रा. यूरिया, 3.00 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट एवं 1.5 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति वृक्ष की दर से थाले में प्रयोग करते हैं। इन खादों में सिंगल सुपर फास्फेट एवं म्यूरेट आफ पोटाश की पूरी मात्रा और यूरिया की आधी मात्रा फरवरी के अन्त में थालों में डालते हैं तथा शेष यूरिया की आधी मात्रा जून के अन्त में देते हैं। इसके अतिरिक्त 120 कि.ग्रा. सड़ी गोबर की खाद (प्रति वृक्ष) जुलाई के प्रथम सप्ताह में डालना लाभदायक होता है। उर्वरक डालने के पूर्व थालों की अच्छी प्रकार से निराई–गुड़ाई अवश्य करनी चाहिए। वृक्षों की सिंचाई मध्य मार्च से मानसून आने तक 10–12 दिन के अन्तराल पर करनी चाहिए ताकि शाखों की वृद्धि अच्छी हो सके और नव सृजित कल्ले नमी के अभाव में सूखने न पायें। अप्रैल से जून माह तक नमी को संचित रखने के लिए काली पालीथीन या आम की पत्ती, सूखी घास अथवा पुवाल थालो में बिछाना (मलचिंग) चाहिए।

सृजित कल्लों का विरलीकरण

दिसम्बर महीने में हुए कृन्तन के लगभग तीन–चार माह उपरान्त (मार्च–अप्रैल) से इन छांटे गए शाखाओं पर बाहुल्यता में नये कल्ले निकलते हैं जिनका वांछित विरलीकरण आवश्यक है। स्वस्थ कल्लों युक्त खुले पर्णीय क्षेत्र के विकास के लिए शाखाओं के बाहरी ओर 8–10 स्वस्थ कल्ले प्रति शाख रखकर, शेष अवांछित कल्लों को हटा दिया जाता है। जून एवं अगस्त में वांछित विरलीकरण के उपरांत कॉपर आक्सीक्लोराइड फफूंद नाशक दवा (3 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना आवश्यक है। इससे पत्तियों पर लगने वाले रोगों से बचाव होता है। अक्टूबर माह में 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का पर्णीय